ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

e/;dkyhu ukjh lajpuk dh lkekftd lk"BHkwfe vkj mudh 0;ogkj lk)fr

Mk0 vkn'k xqIrk
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
पं0 जे0 एल0 नेहरु कॉलेज, बाँदा

मध्यकालीन हिन्दू समाज मूलतः जाति द्वारा चार भागों में विभक्त था। जाति का निर्धारण जन्म से था और सामान्यतः हिन्दू समाज में लम्बवत सामाजिक गतिशीलता का अभाव था। इनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति के लोग शामिल थे। इसके अतिरिक्त अनेक उपजातियां भी थीं जिनमें सहभोज और पारस्परिक विवाह सम्बंध का सर्वथा अभाव था। इसके साथ ही समाज में 'अंत्यज' होते थे, इनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। इन्हें अस्पृश्य और अपवित्र समझा जाता था। वे किसी निम्न कर्म यथा मृत जानवरों या गन्दगी साफ करने के पेशे सदस्य होते थे। इनके अलग सांस्कृतिक रीति–रिवाज थे, पर कोई संस्थागत एकता नहीं थी। इन्हें मन्दिरों में प्रवेश की अनुमति नहीं थी और उनके विरुद्ध अनेक प्रकार की सामाजिक निर्योग्यताएं बनी हुई थीं। नगर सीमा में प्रवेश करने का अधिकार इनको न था, और ये केवल सूचना देकर प्रवेश कर सकते थे। अलबरूनी के अनुसार समाज दो भागों में विभाजित थे,[1] उच्च वर्ग–जिन्हें भाग्यशाली माना जाता था तथा[2] निम्न वर्ग– जिनको कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं था। यदि कोई कारीगर अपने कार्य को छोड़कर दूसरे वर्ग का कार्य अपनाना चाहता था जिससे उसे अधिक[3] सम्मान मिल सके तो भी उसे सामान्यतः अनुमति नहीं मिलती थी।[4] निम्नतर वर्ग में हादी, दोमा, चांडाल आदि आते थे जिनको गंदा काम सौंपा गया था, जैसे गांव भर के मल–मूत्र की सफाई।

यह स्मरणीय तथ्य है कि गुप्त काल में निम्न जातियों की स्थिति का जो वर्णन फाहियान ने किया और 11वीं शताब्दी में उनका जो वर्णन अलबरूनी ने किया, दोनों में महत्वपूर्ण समानताएं हैं और यह दुखद स्थिति मध्यकालीन भारत के शेष भाग में भी बनी रही। यही कारण था कि सूफी संतों द्वारा धर्म प्रचार के उपाय हिन्दू

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

समाज की निम्न जातियों के बीच अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए और इन वर्गों के द्वारा इस्लाम धर्म ग्रहण करने में अभिरुचि दिखाई गई। इससे हिन्दू समाज में भी एक नई चेतना जागी और भक्ति आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ।[5]

मध्यकालीन भारतीय समाज की विविधताओं का वर्णन यूरोपीय यात्रियों ने भी किया है। भारतीय स्रोतों की तुलना में इनके विवरण सामाजिक वर्ग भेद का बेहतर वर्णन प्रस्तुत करते हैं। लिन्शोटेन (1580–1590) तथा डी लायट निम्न वर्ग के भोजन, वस्त्र तथा जीवन स्तर की चर्चा करते हैं। परवर्ती यूरोपीय यात्री पेलसार्ट, बर्नियर इत्यादि उच्च वर्ग की विलासिता तथा निम्न वर्ग के शोषण का विवरण देते हैं।[6]

निःसन्देह इसलाम निरपेक्ष भाव से समाज के जातीय चरित्र अथवा वर्गीय चरित्र का निषेध करता है किन्तु मध्यकालीन भारतीय मुस्लिम समाज भी जन्म, नस्ल और मतमतान्तरों के आधार पर कई वर्गों में स्पष्ट रूप से विभाजित था । सल्तनत काल में तुर्क, अफगान, अरब और हब्शी जातियों के मुसलमान विदेशी मुसलमानों के रूप में देखे जाते थे। इनमें चौदहवीं शताब्दी तक तुर्कों की स्थिति सर्वश्रेष्ठ बनी रही क्योंकि शासक वर्ग में इनका ही स्थान सर्वोपरि था। तैमूर के आक्रमण के पश्चात अफगानों का प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ा और विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों में उन्होंने सत्ता पर अधिकार कर लिया। अरबों और हब्शियों की स्थिति कभी भी सर्वोपरि नहीं रही, फिर भी ये भारतीय मुसलमानों से अधिक प्रतिष्ठित थे।[7]

भारतीय मुसलमान वे लोग थे जिन्होंने स्वेच्छा अथवा बलात् धर्म परिवर्तन द्वारा इस्लाम धर्म ग्रहण किया था या जिनके पूर्वजों ने इस्लाम ग्रहण किया था। ऐसे धर्मपरिवर्तित मुसलमानों में ब्राह्मण, राजपूत तथा अन्य प्रतिष्ठित जातियों के लोग कम ही थे। अधिकतर समाज के निम्न जातियों से धर्म परिवर्तन हुआ था। इसीलिए भारतीय मुसलमानों को विशेष प्रतिष्ठा व प्रभाव नहीं प्राप्त हो सका था। खलजी एवं तुगलक शासकों द्वारा इन्हें बड़े पदों पर नियुक्तियां मिलने लगी थीं। लेकिन फिर भी समाज में विदेशी मुसलमानों को ही अधिक सम्मान प्राप्त रहा। धीरे–धीरे मुस्लिम समाज में दो वर्ग प्रकट हुए जो 'अशराफ' और 'अजलाफ' कहे जाते थे। अशराफ वर्ग में प्रतिष्ठित लोग थे। इनमें अधिकांशतः विदेशी मुसलमान और ऊँची जातियों

के धर्म परिवर्तित मुसलमान थे। अजलाफ वर्ग में सर्वसाधारण लोग थे जिसमें भारतीय मुसलमानों की संख्या सर्वाधिक थी। अशराफ और अजलाफ वर्ग में सामान्यतः पारस्परिक शादी–विवाह के संबन्ध नहीं थे। धीरे–धीरे जाति प्रथा के प्रभाव से मुस्लिम समाज में भी सैयद, शेख, पठान, जुलाहे और अन्य जातियों का विकास हुआ। यद्यपि इनमें पारस्परिक वैवाहिक संबन्ध नहीं थे लेकिन हिन्दू समाज की जाति व्यवस्था जैसी जटिलतायें इनमें नहीं थी। सहभोज पर प्रतिबन्ध और छुआछूत जैसी भावना भी नहीं थी।[8]

मुगल काल में समाज की संरचना का यही रूप बना रहा। केवल एक नया वर्ग इनमें प्रवेश कर गया। यह ईरानियों का वर्ग था। अकबर के समय से ही ईरान से काफी बड़ी संख्या में सामन्त, योद्धा, विद्वान आदि संरक्षण प्राप्त करने के लिए मुगल साम्राज्य में प्रवेश करने लगे थे। धीरे–धीरे इनका प्रभाव बहुत बढ़ गया।

यह स्मरणीय है कि मुस्लिम समाज में लम्बवत् सामाजिक गतिशीलता की सम्भावना बहुत अधिक थी। आर्थिक स्थिति में सुधार अथवा वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अजलाफ वर्ग से अशराफ वर्ग में प्रवेश कर सकता था।[9]

ग्यारहवीं शताब्दी से निरन्तर मुस्लिम आक्रमणों के कारण महिलाओं की दशा में और भी गिरावट आयी। यह बात वस्तुतः मुस्लिम आक्रमण के लिए ही नहीं अपितु सभी विदेशी आक्रमणों के विषय में सत्य है। इन आक्रमणों ने महिलाओं के स्वतन्त्र मेलमिलाप में रोक लगाने में रूढ़िवादी समाज को स्थायी रूप से प्रेरित किया। आक्रमणकारी खानाबदोश जातियों द्वारा औरतों पर आक्रमण के भय को हिन्दुओं ने गम्भीरतापूर्वक लिया। ऐसा विश्वास किया जाता था कि हिन्दू महिलाओं और विदेशियों के बीच कोई भी रिश्ता 'वर्णसंकर' के रूप में सामने आयेगा और सामाजिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो जाएगी। इस विश्वास का परिणाम यह हुआ कि महिलाओं पर और अधिक प्रतिबन्ध लगा दिये गये और उनका दोतरफा शोषण होने लगा। यह मुख्य रूप से ऊँची जातियों तथा शहरी महिलाओं के विषय में सत्य था, किन्तु मुस्लिमों के गांवों में प्रवेश तथा मुस्लिम कर्मचारियों की वहां स्थायी उपस्थिति से ग्रामीण महिलाओं की दशा और भी बुरी तरह प्रभावित हुई।

मध्यकालीन नारी संतों की सामाजिक पृश्ठभूमि और उनकी व्यवहार पद्धति में परिवर्तनों को वर्गीकृत किया गया है जिसे मूल रूप से क्रमशः विजया रामास्वामी एवं ए0 के0 रामानुजन ने अपने लेखों में प्रस्तुतकिया है। यहाँ तालिका के रूप में उनका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है।

dekd	uke	le; dky 'krkCnh	d"kd ,o Jfed ox l lEc) 'kn ,o vNr	fVIi.kh
		o'.ko efgyk lr		
1	मुक्ता बाई	13 वीं	शूद्र	
2	जनाबाई	13 वीं		प्रकार्य चिह्नित नहीं
3	कान्होपात्रा	13 वीं	देवदासी नृत्यांगना	
4	रजई	13 वीं	शूद्र	नामदेव की पत्नी
5	गोनई	13 वीं	शूद्र	नामदेव की पुत्री
6	महदम्बा ;महदैसाद्ध	13 वीं		
7	सोयराबाई	14वीं	महार अछूत	चोक्कामेला की पत्नी
8	निर्मला	14वीं	महार अछूत	चोक्कामेला की पुत्री
9	बहिनाबाई	17वीं		
10	वेनाबाई	17वीं		बाल विधवा
11	अक्काबाई	17वीं		बाल विधवा
12	बयाबाई	17वीं		रामदास की शिश्या
		ohj'ko fyxk;r efgyk lr		
13	अक्का महादेवी	12वीं		
14	गंगाम्बिके	12वीं		बासव की सम्बन्धी
15	निलम्मा	12वीं		बासव की पत्नी
16	अक्का नागम्मा	12वीं		बासव की बहन,'वचन' की लेखिका
17	कलव्वे	12वीं	शूद्र बढ़ई	संत बल्वे की पत्नी
18	लक्षम्मा	12वीं		संत कोंडेया मनचन्ना की पत्नी
19	महादेवी	12वीं	भूमिहीन कृशक	संत मोलिगे मरैय्या की पत्नी

20	लक्षम्मा	12वीं	मजदूर	संत अयाडक्की मरैय्या
21	कदिरै कयक्कल्ला	12वीं	जुलाहा	
22	बोन्तला देवी			
23	कलव्वे		जुलाहा	सिद्ध बुद्धया की पत्नी
24	वीरम्मा	12वीं	ज्दारा जुलाहा	दसरैय्या की पत्नी
25	रच्छावे			कटा कुटैय्या की पत्नी
26	गुड़डाव्ये	15वीं	चाण्डाल	बट्टलेंश्वर की पत्नी
27	मसनम्मा	16वीं		नागिदेव की पत्नी
28	मुक्तई	12वीं		योगी अजगन्ना की बहन
29	गोग्गावे	12वीं		
30	लिंगम्मा	12वीं		हदपडा अपन्न की पत्नी
31	निम्माव्वे	12वीं	भिश्ती	
32	वैजाकवे			
33	कमम्मा		रस्सी बॉटने वाली	
34	सोमाव्वे		धान कूटने वाली	
35	सूल संकवे		वेश्या शूद्र	
36	कन्नड़ी कयाकडे रेमम्मा		दर्पण निर्माता ;शूद्र	
37	गणगम्मा		वेश्या ;शूद्र	मरैय्या की पत्नी

nf{k.kh ndu

38	करैक्काल अम्मैयार	6वीं		शैव ;नयनारद्ध
39	मंगैयार फसैयार	7वीं		शैव ;नयनारद्ध
40	तिलकवतियार	7वीं	वेल्लाल	शैव
41	तडगई			वैश्णव
42	चंक्रोत्तौम्मा	8वीं		वैश्णव
43	वन्दी	9वीं	सफाई कर्मी	शैव
44	अलगी	11वीं	झूद्र	शैव
45	ओवैयार	12–13वीं	टतुलोम	एक पुलाया महिला की शैव पुत्री
46	वसुकियार	14वीं	वेल्लाल	तिरुवल्लुवर की पत्नी

47	उतिरनालुर नंगई	15वीं	परैय ;भेडपालकद्ध	पैचलुर पडिकम की लेखिका
48	करुरम्मा	17वीं		वैश्णव
49	ननगापेन्नु	17वीं		वैश्णव
	efgyk oS".ko lUr& jkekuqt dk f'k"; ,oa vuq;k;h			
50	तिरुवनन्तु परन्तु अम्मै	12वीं		
51	तिरुवत्तरु अम्मै	12वीं		
52	तिरुवपरिसरतु अम्मै	12वीं		
53	मन्नार कोयिल पोरेरु अम्मै	12वीं		
54	तिरुकन्नपुरन्तु अम्मै	12वीं		
55	तिरुनारैयार अम्मै	12वीं		
56	तिरुपति श्रीकार्यम अम्मै	12वीं		
57	अण्डाल अम्मै	12वीं		कुरतझर की पत्नी
58	नयका देवियार	12वीं		
59	तुय्य पेरुनदेवियार	12वीं		गोविन्द अम्बर की मॉ
60	सिरिया अण्डाल	12वीं		गोविन्द अम्बर की पत्नी
61	कान्तिमती या भूमिपिस्ती	12वीं		रामानुज द्वारा दीक्षित श्री सैल की पुत्री
62	चेलन चेलम्बा	11वीं		
63	बीबी लचिमार	11वीं		दिल्ली के मुस्लिम शासक प्रमुख की पुत्री, एकमात्र
64	अतुलै अम्मै	11वीं		मुस्लिम वैश्णव भक्त पेरियनम्बी ;रामानुज के गुरुद्ध
65	अम्मांगी अम्मा			की पुत्री
66	करत्तु अण्डाल			
67	देवकी पिरतियार			
68	यतिराजा वल्लीयार			
69	पंकजा सेल्वियार			
70	पोन्नाचियार या हेमम्बल	12वीं	मल्ल	पिल्लै उरंग की पत्नी
71	इन्निला वनैयार			
72	सुदिकोदुत्तल			

73	तिरुथावी पडिनाल			
74	त्रिपुरा देवी	11वीं	मल्ल	अखलंगा नट्टालवन की पत्नी
75	कुमदावल्ली	11वीं	कल्लर	तिरुमंगै अझवार की पत्नी
76	अक्काच्ची	12वीं		पाराशर भट्टर की पत्नी
77	मन्नी			पाराशर भट्टर की पत्नी
78	तिरुमलम्मा या टिकम्मा	14वीं		अनम्मार्चा की पत्नी 'सुभद्रापरिणयम्' की लेखिका
79	अक्क कन्ना	14वीं		अनम्माचर्या की पत्नी
80	लक्ष्मी देवी या परतिकोल्ला नच्चियार			वरदाचार्य करपासरन्ना की पत्नी

lnHkZ xUFk ,o fVIi.kh

1. सतीश चन्द्रा, 'मध्यकालीन भारत (दिल्ली सल्तनत 1206 से 1526)', पृ0–24
2. वही
3. हरिश्चन्द्र वर्मा, 'मध्यकालीन भारत' खण्ड–1, पृ0–134
4. इम्तियाज अहमद, 'मध्यकालीन भारत–एक सर्वेक्षण', पृ0–215
5. ह्वीलर एवं मैकमिलन, 'यूरोपियन ट्रैवेलर्स इन इण्डिया', पृ0–68
6. इम्तियाज अहमद, पूर्वोद्धृत पृ0–214
7. वही
8. वही, पृ0–215
9. विजया रामास्वामी, 'वीमेन सेन्ट्स इन मेडिवेल इण्डियन सोसायटी', द इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यू आई.एस.आर. खण्ड XVII] जुलाई 90–जनवरी 91, पृ0–61